

ACHARYA SHREE SURENDRASURISHWARJI JAIN TATVA GYANSHALA

12, SHREYANSNATH SOCIETY, B/H DHARNIDHAR TEMPLE,
GODAVARI ROAD, VASANA, AHMEDABAD-7

Book Issue Slip

Member No. : 1025

Mobile Number : 9428502456

Receipt No. : A1647

Member Name : पू.आचार्य भ. विजय जगच्चंद्रसूरीश्वरजी म.सा.

Total Issued : 1913

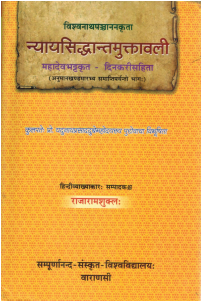
Address : 11, भुवनेश्वरपार्क सोसायटी, नारणपुरा क्रोसींग, नारणपुरा

Issue Date : 06/09/2023

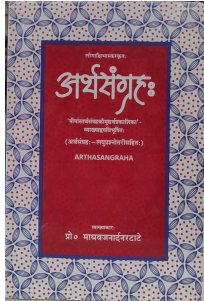
Last Date : 05/12/2023

Sr No.	Vargank No.	Kruti Name
1	AB02826	न्यायसिद्धान्तमुक्तावली दिनकरी
2	AC12280	अर्थसंग्रह
3	AC12596	रघुवंशमहाकाव्यम्
4	AC05350	परमलघुमंजुषा (भावप्रकाशिका, बालबोधिनी संस्कृत हिन्दी व्याख्योपेता)
5	AC01210	वेदान्तसार टीका (विद्वन्मनोरंजनी टीका)
6	AC04232	वैयाकरणभूषणसार (दर्पण हिन्दी भाष्योपेत)
7	AC03833	प्रौढमनोरमा (अव्ययीभावान्ता लघुशब्दरत्न, भैरवी व्याख्या, रत्नप्रभानामक टिपण्या)
8	AC03997	परिभाषेन्दु शेखर
9	AC05150	कुमारसंभवम् (पंजिक्या समेतम्)
10	AC02573	सांख्यतत्त्व कौमुदी
11	AC03113	पादुकासहस्रम् (परीक्षाभिधया टीक्या मुट्टकितम्)
12	AC03321	तर्कसंग्रह (न्यायबोधिण्या, पदकृत्येन, परीक्षाटीका, भाषाटीक्या)
13	AC03486	माधुरीपंचलक्षणी (व्याप्तचन्द्रिकाख्या व्याख्या सहिता तथा माधुरीसिंहव्याघ्रभक्षण)

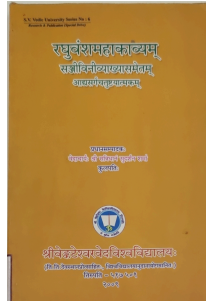
AB02826



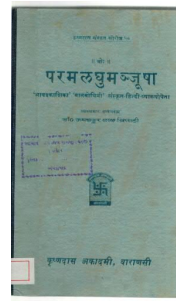
AC12280



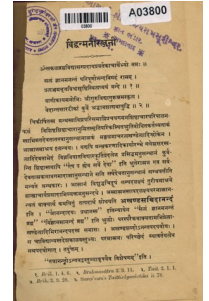
AC12596



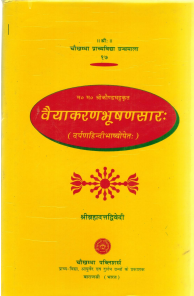
AC05350



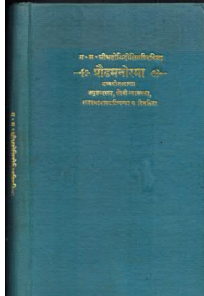
AC01210



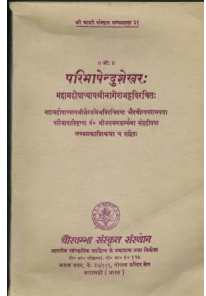
AC04232



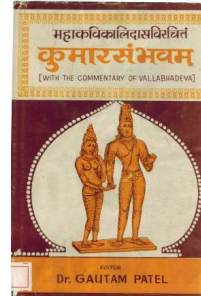
AC03833



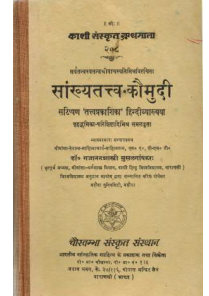
AC03997



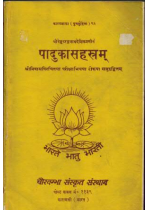
AC05150



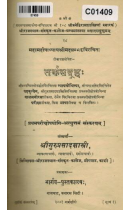
AC02573



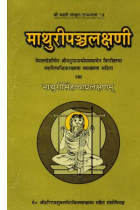
AC03113



AC03321



AC03486



Notes : AB02826, AC12280, AC12596, AC05350, AC01210, AC04232, AC03833, AC03997, AC05150, AC05150, AC02573, AC03113, AC03321, AC03997, AC05350, AC03486 - गोयमचंद्र म.सा.(मोरवाडा)

AB - B Size Books,वासणा ज्ञानभंडार, अमदावाद,AC - C Size Books,वासणा ज्ञानभंडार, अमदावाद

Book Received By

Book Issue By

संस्थाना नियमो :

- 1) संस्थाना पुस्तको फक्त मेम्बरने ज आपवामां आवशे.
- 2) पुस्तक 90 दिवसमां परत करवानुं रहेशे, कदाच वधारे समय राखवानुं थाय तो 90 दिवस बाद रिन्नु कराववु अनिवार्य छे.
- 3) पुस्तक फाटी के खोवाय जाय तो वाचके संस्था नक्की करे तेदलो दंड भरवानो रहेशे. दंडनी रकम पुस्तकनी छापेली किमत करता वधु होई शके छे.